

५३. मद्यदोष कथा

श्रीमत्सर्वज्ञमानस्य वक्ष्ये सम्पद्विधायकम् । जनानां प्रतिबोधाय मद्यदोषकथानकम् ॥१॥
 एकचक्रपुरात्पूर्वं गंगां गन्तुं विनिर्गतः । एकपादविधो वेदवेदाङ्गानां सुपारगः ॥२॥
 स परिव्राजको विष्णुचरणाम्भोजषट्पदः । मार्गे गच्छन्विधेर्योगात्प्राप्तो विन्ध्याटवीं तदा ॥३॥
 तत्राटव्यां वयोन्मत्तैः प्रोन्मत्तैर्मद्यपानतः । मांसासक्तैः कुमातंगैर्मार्तंगीगीतसङ्गतैः ॥४॥
 मार्गं रुद्ध्वा धृतः सोऽपि भणितश्चेति रे द्विज । मद्यमांसनवस्त्रीणां मध्ये यद्रोचते तराम् ॥५॥
 तदेकं क्रियते कर्म त्वया भो नान्यथा ध्रुवम् । जीवता दृश्यते गंगानदी रे मूढमानस ॥६॥
 सोऽपि तत्र स्मृतेर्वाक्यं चिन्तयामास चेतसि । तिलसर्षपमात्राच्च दोषाः स्युर्मांसभक्षणात् ॥७॥

५३. शराब पीने वालों की कथा

सब सुखों के देने वाले सर्वज्ञ भगवान् को नमस्कार कर शराब पीकर नुकसान उठाने वाले एक ब्राह्मण की कथा लिखी जाती है। वह इसलिए कि इसे पढ़कर सर्व साधारण लाभ उठावें ॥१॥

वेद और वेदांगों का अच्छा विद्वान् एकपात नाम का एक संन्यासी एक चक्रपुर से चलकर गंगा नदी की यात्रार्थ जा रहा था। रास्ते में जाता हुआ वह दैवयोग से विन्ध्याटवी में पहुँच गया। यहाँ जवानी से मस्त हुए कुछ चाण्डाल लोग दारू पी-पीकर एक अपनी जाति की स्त्री के साथ हँसी मजाक करते हुए नाचकूद रहे थे, गा रहे थे और अनेक प्रकार की कुचेष्टाएँ में मस्त हो रहे थे। अभाग्य संन्यासी इस टोली के हाथ पड़ गया। उन लोगों ने उसे आगे न जाने देकर कहा—अहा! आप भले आए! आप ही की हम लोगों में कसर थी। आइए, मांस खाइए, दारू पीजिए और जिन्दगी का सुख देने वाली इस खूबसूरत औरत का मजा लूटिए। महाराज जी, आज हमारे लिए बड़ी खुशी का दिन है और ऐसे समय में जब आप स्वयं यहाँ आ गए तब तो हमारा यह सब करना धरना सफल हो गया। आप सरीखे महात्माओं का आना, सहज में थोड़े ही होता है? और फिर ऐसे खुशी के समय में। लीजिए, अब देर न कर हमारी प्रार्थना को पूरी कीजिए उनकी बातें सुनकर बेचारे संन्यासी के तो होश उड़ गए। वह इन शराबियों को कैसे समझाए, क्या कहे, और वह कुछ कहे सुने भी तो वे मानने वाले कब? वह बड़े संकट में फँस गया। तब भी उसने इन लोगों से कहा—बतलाओ मैं मांस, मदिरा कैसे खा पी सकता हूँ? इसलिए तुम मुझे जाने दो। उन चाण्डालों ने कहा—महाराज कुछ भी हो, हम तो आपको बिना कुछ प्रसाद लिए तो जाने नहीं देंगे। आपसे हम यहाँ तक कह देते हैं कि यदि आप अपनी खुशी से खायेंगे तो बहुत अच्छा होगा, नहीं तो फिर जिस तरह बनेगा हम आपको खिलाकर ही छोड़ेंगे। बिना हमारा कहना किए आप जीते जी गंगाजी नहीं देख सकते। अब तो संन्यासी जी घबराये। वे कुछ विचार करने लगे, तभी उन्हें स्मृतियों के कुछ प्रमाण वाक्य याद आ गए— ॥२-७॥

यतः—तिलसर्षपमात्रं च मांसं खादन्ति ये नराः। तिष्ठन्ति नरके ताव-द्यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥
 चाण्डालीसंगमे चात्र द्विजानां सुकुलोद्भुवाम्। प्रायश्चित्ताद्भवेच्छुद्धिः काष्ठभक्षणसंज्ञकात्॥
 य एवं विधां सुरां पिबति न तेन सुरा पीता भवतीति निखिलमखमणौ सूत्रामणौ।
 धातकीपिष्टपानीयैर्गुडाद्यैर्मद्यसंभवः। तस्माद्धेतोर्न दोषोत्र स्वचित्ते चेति मूढधीः॥८॥
 संविचार्य महापापं मद्यपानं चकार सः। तस्य माहात्म्यतो गाढं संजातो नष्टमानसः॥९॥
 दूरीकृत्य स्वकौपीनं चक्रे चोद्भटनर्त्तनम्। ग्रहग्रस्तो यथा कष्टं कुसङ्गः कुलनाशकः॥१०॥
 ततस्तीव्रक्षुधाक्रान्तो मतिभ्रष्टः स तापसः। पापकर्मोदये शीघ्रं पलं भक्षितवान्पुनः॥११॥
 पूर्णकुक्षिस्ततः सोपि प्रोल्लसत्कामपीडितः। मातंगीं मदनोन्मत्तां कुधीः कामितवांस्तदा॥१२॥
 हेतुशुद्धेः श्रुतेर्वाक्यात्पीतमद्यः किलैकपात्। मांसमातङ्गिकासङ्गमकरोन्मूढमानसः।
 इति ज्ञात्वा बुधैस्त्याज्या हेतुशुद्धेर्मतिर्भुवि। मृष्टतोयात्समुत्पन्नं विषं हन्त्येव देहिनाम्॥१३॥

“जो मनुष्य तिल या सरसों के बराबर मांस खाता है वह नरकों में तब तक दुःख भोगा करेगा, जब तक पृथ्वी पर सूर्य और चन्द्र रहेंगे अर्थात् अधिक मांस खाने वाला नहीं। ब्राह्मण लोग यदि चाण्डाली के साथ विषय सेवन करें तो उनकी ‘काष्ठभक्षण’ नाम के प्रायश्चित्त द्वारा शुद्धि हो सकती है। जो आँवले, गुड़ आदि से बनी हुई शराब पीते हैं, वह शराब पीना नहीं कहा जा सकता—आदि।” इसलिए जैसा ये कहते हैं, उसके करने में शास्त्रों, स्मृतियों से तो कोई दोष नहीं आता। ऐसा विचार कर उस मूर्ख ने शराब पी ली। थोड़ी ही देर बाद उसे नशा चढ़ने लगा। बेचारे को पहले कभी शराब पीने का काम पड़ा नहीं था इसलिए उसका रंग इस पर और अधिकता से चढ़ा। शराब के नशे में चूर होकर यह सब सुध-बुध भूल गया, अपनेपन का इसे कुछ ज्ञान न रहा। लंगोटी आदि फेंक कर वह भी उन लोगों की तरह नाचते-कूदने लगा जैसे कोई भूत-पिशाच के पंजे में पड़ा हुआ उन्मत्त की भाँति नाचने-कूदने लगता है। सच है, कुसंगति कुल, धर्म, पवित्रता आदि सभी का नाश कर देती है। संन्यासी बड़ी देर तक तो इसी तरह नाचता-कूदता रहा पर जब वह थोड़ा थक गया तो उसे जोर की भूख लगी। वहाँ खाने के लिए मांस के सिवा कुछ भी नहीं था। संन्यासी ने तब मांस ही खा लिया। पेट भरने के बाद उसे काम ने सताया। तब उसने यौवन की मस्ती में मत्त उस स्त्री के साथ अपनी नीच वासना पूरी की। मतलब यह कि एक शराब पीने से उसे ये सब नीचकर्म करने पड़े। दूसरे ग्रन्थों में भी इस एकपात संन्यासी के सम्बन्ध में लिखा है कि—मूर्ख एकपात संन्यासी ने स्मृतियों के वचनों को प्रमाण मानकर शराब पी, मांस खाया और चाण्डालिनी के साथ विषय सेवन किया। इसलिए बुद्धिमानों को उचित है कि वे सहसा किसी प्रमाण पर विश्वास न कर बुद्धि से काम लें, क्योंकि मीठे पानी में मिला हुआ विष भी जान लिए बिना नहीं छोड़ता ॥८-१२॥

देखिये, एकपात संन्यासी गंगा-गोदावरी का नहाने वाला था, विष्णु का सच्चा भक्त था, वेदों

नित्यस्नानविधायको हरिपदद्वन्द्वे सुसेवापरो वेदज्ञोपि किलैकपात्स्मृतिमतिर्मष्टः परिव्राजकः।

अज्ञानादिह हेतुशुद्धिचलितो मुक्त्वा सुशीलं ततो ज्ञात्वैवं बुधसत्तमैर्जिनपतेः संज्ञानमासेव्यताम् ॥१४॥

इति कथाकोशे मद्यदोषाख्याने एकपात्परिव्राजकस्य कथा समाप्ता।

५४. सगरचक्रवर्तिनः कथा

संप्रणम्य जिनाधीशं सुराधीशैः समर्चितम्। श्रीमद्वितीयचक्रेश-चरित्रं रचयाम्यहम् ॥१॥

जम्बूद्वीपेऽत्र विख्याते प्राग्विदेहे मनोहरे। सीतानद्या अवाग्भागे सुदेशो वत्सकावती ॥२॥

तत्रस्थे पृथिवीनाम-पत्तने सुचिरन्तने। जयसेनो महाराजो जयसेनाख्य तत्प्रिया ॥३॥

तयोः पुत्रः समुत्पन्नो रतिषेणो गुणोज्ज्वलः। द्वितीयो धृतिषेणश्च चारुसौभाग्यशोभितः ॥४॥

एकदा रतिषेणाख्यो मृत्युं प्राप्तो विधेर्वशात्। तच्छोकेन महीनाथो जयसेनो विशुद्धधीः ॥५॥

स्वराज्यं धृतिषेणाय दत्त्वा पुत्राय धीमते। समभ्यर्च्य जिनाधीशान्कार्यसिद्धिविधायिनः ॥६॥

सार्द्धं महारुतेनोच्चैर्मिथुनेन तथा नृपैः। यशोधरगुरोः पार्श्वे दीक्षां जैनैश्वरीं श्रितः ॥७॥

दीर्घकालं तपः कृत्वा संन्यासेन प्रसन्नधीः। मृत्वा महाबलो नाम्ना देवोभूदच्युतो महान् ॥८॥

महारुतोपि तत्रैव मणिकेतुः सुरोभवत्। जिनेन्द्रपदपद्मेषु चञ्चरीकोतिभक्तिमान् ॥९॥

और स्मृतियों का अच्छा विद्वान् था, पर अज्ञान से स्मृतियों के वचनों को हेतु-शुद्ध मानकर अर्थात् ऐसी शराब पीने में पाप नहीं, चाण्डालिनी का सेवन करने पर भी प्रायश्चित्त द्वारा ब्राह्मणों की शुद्धि हो सकती है, थोड़ा मांस खाने में दोष है, न कि ज्यादा खाने में। इस प्रकार मन का समझौता करके उसने मांस खाया, शराब पी और अपने वर्षों के ब्रह्मचर्य को नष्ट कर वह कामी हुआ। इसलिए बुद्धिमानों को उन सच्चे शास्त्रों का अभ्यास करना चाहिए जो पाप से बचाकर कल्याण का रास्ता बतलाने वाले हैं और ऐसे शास्त्र जिन भगवान् ने ही उपदेश किए हैं ॥१३-१४॥

५४. सगर चक्रवर्ती की कथा

देवों द्वारा पूजा किए गए जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर दूसरे चक्रवर्ती सगर का चरित लिखा जाता है ॥१॥

जम्बूद्वीप के प्रसिद्ध और सुन्दर विदेह क्षेत्र की पूरब दिशा में सीता नदी के पश्चिम की ओर वत्सकावती नाम का एक देश है। वत्सकावती की बहुत पुरानी राजधानी पृथ्वीनगर के राजा का नाम जयसेन था। जयसेन की रानी जयसेना थी। इसके दो लड़के हुए। इनके नाम थे रतिषेण और धृतिषेण। दोनों भाई बड़े सुन्दर और गुणवान् थे। काल की कराल गति से रतिषेण अचानक मर गया। जयसेन को इसके मरने का बड़ा दुःख हुआ और इसी दुःख के मारे वे धृतिषेण को राज्य देकर मारुत और मिथुन नाम के राजाओं के साथ यशोधर मुनि के पास दीक्षा ले साधु हो गए। बहुत दिनों तक इन्होंने तपस्या की। फिर संन्यास सहित शरीर छोड़ स्वर्ग में वह महाबल नाम का देव हुआ इनके साथ दीक्षा लेने वाला मारुत भी इसी स्वर्ग में मणिकेतु नामक देव हुआ, जो कि भगवान् के